दो युगों की संधि बेला

जिस चीज का जहाँ से अन्त होता है वहाँ से एक नवीन वस्तु का आरम्भ होता है। जब मनुष्य मरता है तो वहाँ से उसे एक नया जीवन मिलता है। एक जीवन लीला समाप्त होती है तो दूसरी आरम्भ, यह निविर्वाद सत्य है। 21 वीं सदी परिवर्तन की बेला है इसको धर्म सत्ता, विज्ञान सत्ता तथा राज सत्ता तीनों ही सत्ताओं ने परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से स्वीकार किया है। इसपर धर्म और अध्यात्म सत्ताओं ने अधिक बल दिया है क्योंकि इनका अतीत और भविष्य के बारे में खोज जारी है। संधि बेलायें तो कई आती है, सतयुग और त्रेतायुग, त्रेता और द्वापर, द्वापर और कलियुग ये क्रम से आती है। परन्तु कलियुग और सतयुग की संधि बेला विशेष बेला होती है क्योंकि यहाँ एक विशाल परिवर्तन की प्रक्रिया होती है। यहाँ से एक नये युग और नयी दुनिंया का सूत्रपात तथा पुरानी जर्जर कलह-क्लेश वाली सर्व अवगुणों से सम्पन्न दुनियां का अन्त। इसको पुरूषोत्तम संगमयुग कहते है जिसमें मनुष्य कनिष्टता से उत्कृष्ट स्थिति को प्राप्त करता है। इस युग में आत्माा और परमात्माा का महामिलन होता है। भक्तों को भक्ति का फल, अहिल्याओं, कुब्जाओं का उद्धार होता है। युगों-युगों से ईश्वर को पाने की ललक और आश पूरी होती है। वैसे तो सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग की संधि बेला केवल एक दूसरे को जोड़ती है। और वहाँ से सतो, सत्व गुण, रजो और तमोप्रधानता अपना-अपना प्रभाव कार्य करने लगते है। इसलिए ऐसे समय पर गुणों के आधार पर प्रकृति में ऊथल-पुथल की स्थिति होकर फिर सामान्य हो जाती है। परन्तु कलियुग और सतयुग की संधि बेला में महाविनाश की भयानक घटना होती है।

जब सतयुग होता है तो वहाँ के लोग सोलह कला सम्पन्न के रूप में देवता के रूप में होते है। जब त्रेतायुग में सत्वगुण की दुनियां, चन्द्रवंशी राज्य फिर द्वापर युग में रजोप्रधान और जब कलियुग की बारी आती है तो वहाँ मनुष्यात्माओं की तमोप्रधान स्थिति होने के कारण कलाविहिन हो जाती है। एक तरह से चार युगों के चक्र में आत्माओं का पदार्पण इस सृष्टि पर सतयुग से ही होता है। फिर इसमें पार्ट बजाते-बजाते उतरती कला की तरफ बढ़ती जाती है। कलियुग का अन्त तथा सतयुग की संधि बेला अर्थात अंधकार का अन्त और प्रकाश का आगमन, भ्रष्टाचारी दुनियां का अन्त, श्रेष्ठाचारी दुनियां का प्रारम्भ। इसको संगमयुग भी कहते है। यह ऐसा समय होता है जब कलाविहिन ताम्रयुग में सुख-शान्ति की पिपासा और उम्मीद में सभी मनुष्यात्माओं की निगाहों को एक पुन: उस युग तथा अपने वास्तविक स्वधर्म और स्वरुप में जाने की तलाश होती है। अज्ञानता का तम इतना घोर होता है कि धर्म और अध्यात्म प्रेमी की नजर भी सत्य की खोज एवं परख में विफल रहती है। इतना जरूर है कि इस आस्था और भावना से परमात्मा की डगर पर चलती रहती है। परन्तु सच्चे सुख एवं शान्ति की प्राप्ति से वंचित ही रहती है।

कलियुग रावण की बेला है, इसमें माया का इतना विकराल रूप है कि मनुष्य स्वयं को ही भगवान मानने लगता है। इसी मद में चूर विज्ञान सत्ता अपने बल पर विश्व में शान्ति और नवीन युग के लिए आस्था, भावना, संयम और शान्ति को छोड़ सृष्टि पर बसे मानवजाति को पलभर में मिटा देने की क्षमता वाले अश्त्र-शस्त्रों का निर्माण तक कर डालते है। इन विनाशक हथियारों पर सोये कलियुग की जब अंतिम सांसे नजदीक आ पहुँचती है तब इस जगत के नियंता सर्व कल्याणकारी परमात्मा शिव अपने वायदे कि यदा-यदाहि धर्मस्य

ग्लानिर्वभवति भारत, अभ्युत्थानम तदात्मानं सृज्यामहम् के अनुसार जब-जब धर्म की ग्लानि होती है तब-तब मैं इस सृष्टि पर एक धर्म की स्थापना तथा अनेक धर्मों के विनाश के लिए उनका अवतरण होता है। आज जिस युग की समाप्ति बेला है, इसमें जिस तरह की अराजकता है वैसा किसी भी युग में नहीं हुआ है। इस युग के समाप्ति के सम्बन्ध के बारे में आध्यात्मिक दिव्य महान विभूतियों ने कई भविष्यवाणियां की है जो सत्यता के रूप में सामने है। चाहे वह विश्व प्रसिद्ध भविष्यवक्ता नास्त्रेदामस या सुप्रसिद्ध कवि तुलसीदास या अन्य धर्मगुरूओं की है। सबके अनुसार यह समय अपने चरम पर है। गीता में जो श्री कृष्ण ने कहा था वह भी सर्वविदित है कि आज विभिन्न जाति धर्म होने के कारण साम्प्रदायिकता, आपसी वैमनस्यता, मजहवी झगड़े की अति है। भाई-बहन, माता-पिता, पिता-पुत्री आदि के पवित्र रिश्ते भी कलंकित हो रहे है। प्रकृति भी इस युग की समाप्ति की आहट दे रही है। कहीं अकाल, बाढ़, भूकम्प आदि तांडव कर रही है। इस कलियुग के अन्त में महाविनाश के बाद आने वाली दुनियां सतयुग होगी। जहाँ सभी मनुष्य श्रेष्ठाचारी, सोलह कला सम्पूर्ण और मर्यादा पुरूषोत्तम होंगे।

परमात्मा ने युग की समाप्ति बेला में अपने अवतरण के सम्बन्ध में कहा कि जब मैं इस सृष्टि पर आता हूँ तो कोटो में कोई और कोई में भी कोई ही मुझे पहिचानता है। यह वही समय है जब भौतिकता की इतनी चमक है कि मनुष्य इसमें दिग्भ्रमित होकर भगवान के सन्दर्भ में दोमुही बातें करता है। परमात्माा का अवतरण हो चुका है और वह नई दुनियां की स्थापना करा रहे है। आसुरी वृत्ति वाले मनुष्यों को आत्माा तथा परमात्मा का पूर्ण परिचय प्रदान कर उसे सतयुगी देवताई तुल्य दैवी गुणों की धारणा करा रहे हैं। यह पुरूषोत्तम युग है इसमें दिव्य पुरूषार्थ कर मनुष्य नर से नारायण तथा नारी से लक्ष्मी समान गुणधारी बन सकता है। ईश्वरीय संदेश है कि प्यारे बच्चों उठो जागो और स्वयं को तथा परमात्मा को पहचानों और स्वर्णिम दुनियां में चलने की तैयारी करो अभी घर जाने का समय है। तो आईये हम सभी भी रावणी दुनियां के प्रभाव से मुक्त होकर अपने जीवन में दैवी गुणों का संचार करे तथा नई दुनियां तथा अपने घर परमधाम चलने की तैयारी करें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com